प्रेस विज्ञप्ति लैंसेट द्वारा सख्त एम्बार्गोः

गुरुवार, 21 अक्टू. 2010 04.31 बजे नई दिल्ली समय
गुरुवार, 21 अक्टू. 2010 00.01 बजे लंदन समय
बुधवार, 20 अक्टू. 2010 19.01बजे टोरोंटो समय

नए शोध से भारत में मलेरिया से हर साल 2 लाख परिहार्य मौतें होने का पता चला

नई दिल्ली, भारत – भारत, कनाडा और इंग्लैंड के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक नए अध्ययन के मुताबिक, भारत में मलेरिया की वजह से समय से पूर्व होने वाली मौतों का अनुमान वास्तविकता से बहुत कम लगाया गया है।

क्योंकि मलेरिया बहुत आसानी से और कम खर्च में ठीक होने वाली बीमारी है, इसलिए मलेरिया होने की समुचित जानकारी वाले रोगियों के सर्वेक्षणों में भ्रामक रूप से कुछ ही मौतें होने का पता चलता है। मलेरिया से ज्यादातर मृत्यु ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को अचानक बहुत तेज बुखार होने से होती हैं जिसे कभी किसी स्वास्थ्यकर्मी द्वारा देखा नहीं जाता है।

प्राणघातक बीमारी के बारे में परिवार के सदस्यों से विवरण लेने वाला, नया अध्ययन भारत में किसी भी वजह से होने वाली कुल मौतों का राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाला नमूना है। इसके नतीजे दिखाते हैं कि मलेरिया की वजह से भारत में 70 वर्ष की आयु से पहले, समय–पूर्व लगभग 2 लाख मौतें होती हैं (15 वर्ष से कम आयु के 80 हजार बच्चे और 1 लाख 20 हजार वयस्क)। मलेरिया से होने वाली मौतों का पहले का अनुमान इस नई संख्या का 10% से भी कम था।

स्वास्थ्य संबंधी शोध विभाग के सचिव और भारतीय चिकित्सा शोध परिषद के महानिदेशक डॉ. वीएम कटोच ने बताया, ''इन संख्याओं के बारे में आश्चर्य करने वाली बात यह है कि, एड्स या कैंसर से भिन्न, यदि तुरंत इलाज किया जाए तो मलेरिया उपचार योग्य रोग है। ''हमारे पास सुरक्षित, प्रभावी और सस्ती दवाइयां हैं जो मलेरिया के रोगियों को तेजी से ठीक कर सकती हैं। लेकिन इसके लिए हमें स्वास्थ्यचर्या सुविधाओं तक तत्परता से पहुंच पाने की जरूरत है।''

प्राप्त निष्कर्ष भारत में सभी मौतों के कारणों के बारे में पहले राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व वाले नमूने से हासिल किए गए हैं। भारत के रजिस्ट्रार–जनरल के कार्यालय और सेंट माइकेल हास्पिटल स्थित सेंटर फॉर ग्लोबल हेल्थ रिसर्च (सीजीएचआर) और टोरोंटो विश्वविद्यालय, कनाडा, की टीमों के नेतृत्व में संपन्न हुआ यह शोध, इंग्लैंड की प्रमुख चिकित्सा पत्रिका द् लैंसेट, में आज (21 अक्टूबर, 2010) को ऑनलाइन प्रकाशित हुआ है।

सीजीएचआर के निदेशक, सह–प्रमुख लेखक प्रो. प्रभात झा ने कहा, ''राष्ट्रीय स्तर का यह ऐसा पहला अध्ययन है जिसने पूरे भारत में सीधे लोगों से मौत के कारणों के बारे में जानकारी एकत्रित की है। अध्ययन यह दर्शाता है कि पहले अनुमान लगाए लोगों की तुलना में कहीं ज्यादा लोगों की मृत्यु मलेरिया से होती है। इन मौतों में से ज्यादातर मौतें भारत के कुछ राज्यों में होती हैं जहां मलेरिया के परजीवियों की सबसे खतरनाक किस्म का पाया जाना सामान्य बात है।''

भारत के उड़ीसा राज्य में किसी भी अन्य राज्य की तुलना में ज्यादा मौतें मलेरिया से होती हैं – प्रति वर्ष 50 हजार। ''उच्च–मलेरिया'' वाले अन्य बड़े राज्य भी पूर्वी भारत में हैं, ये छत्तीसगढ़, झारखंड और असम हैं।

अध्ययन ने 6671 क्षेत्रों, व प्रत्येक क्षेत्र में लगभग 200 घरों को शामिल किया। ये क्षेत्र संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए सांयोगिक तौर पर चुने गए थे। इनमें, मौत के समय के आसपास के लक्षणों और स्थितियों के वर्णन करने के लिए, 800 फील्ड कर्मचारियों ने 2001–03 में मरने वाले लोगों के एक लाख 22 हजार परिवारों का साक्षात्कार लिया। इसके बाद प्रत्येक मृत्यु का संभावित कारण जानने के लिए घरों में बताए गए इन वर्णनों की लिखित रिपोर्ट में प्रत्येक मामले को कम से कम दो चिकित्सकों द्वारा पृथक रूप से कोड दिए गए।

कोड देने वाले चिकित्सक अंततः सहमत थे कि 1 महीने से 70 वर्ष की आयु में होने वाली सभी मृत्यु में से लगभग 4% का संभावित कारण मलेरिया था। यह अनुपात आयु के अनुसार बदलता है (जन्म के पहले महीने में 0%, बाद में बचपन की आयु में 6% और वयस्कों में 3%)। प्रत्येक आयुसीमा के भीतर, पूरे भारत में किसी भी कारण से होने वाली मृत्यु की वार्षिक संख्या राष्ट्रीय आंकड़ों से ज्ञात हुई, मलेरिया के कारण होने वाली मौतों का दर इस अध्ययन से ज्ञात हुआ है, और इन्हें जोड़ने से मलेरिया से होने वाली मृत्यु की राष्ट्रीय स्तर पर संख्या ज्ञात हुई।

कुल मिलाकर, प्रत्येक वर्ष लगभग 2 लाख समय–पूर्व मृत्यु का कारण मलेरिया को पाया गया। मलेरिया की वजह से होने वाली मृत्यु में से, 90% ग्रामीण क्षेत्र में और 86% किसी भी प्रकार की चिकित्सकीय सुविधा के बिना घर पर हुईं।

साथ में प्रकाशित एक संपादकीय में, मलेरिया एटलस प्रोजेक्ट के सह–संस्थापक, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड के डॉ. साइमेन हे, ने स्पष्ट किया कि किस तरह विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा स्वीकृत एक वर्ष में मलेरिया से केवल 15 हजार मृत्यु के पहले के अनुमान में मलेरिया से होने वाली ज्यादातर मौतें शायद इसलिए शामिल नहीं हैं क्योंकि बीमारी तेजी से होती है और किसी स्वास्थ्यकर्मी द्वारा कभी देखी नहीं जाती है।

और उन्होंने कहा कि, क्योंकि भारत में मलेरिया से होने वाली ज्यादातर मौतें किसी भी स्वास्थ्य सुविधा से दूर होती हैं, ''इसलिए मलेरिया से होने वाली मृत्यु स्वास्थ्य की रिर्पोटों के लिए मुख्य रूप से ओझल रह जाती हैं।''

अध्ययन के लेखकों ने निष्कर्ष निकाला: ''यदि मलेरिया से होने वाली मौतों का अनुमान भारत में, या पूरी दुनिया में वयस्कों में, वास्तविकता से कम आंके जाने की संभावना है, तो यह रोग नियंत्रण की कार्यनीतियों को महत्वपूर्ण रूप से बदल सकता है, खासतौर पर मलेरिया के ज्यादा प्रभाव वाले राज्यों के ग्रामीण हिस्सों में। उन्होंने सुझाव दिया कि भारत, अफ्रीका और अन्य जगहों पर मलेरिया होने के मामले और मृत्यु दर के बेहतर अनुमानै, बच्चों और वयस्कों दोनों के लिए सामाजिक स्तर के किफायती उपचार प्रदान करने के तर्कसंगत आधार बन सकते हैं।

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर और अर्थशास्त्र में 1972 के नोबेल पुरस्कार विजेता, केनेथ जे. एरो ने कहा कि ''आर्टेमिसीनन कॉम्बिनेशन थेरापी अत्यधिक प्रभावशाली हैं और ''मलेरिया की किफायती चिकित्सा सुविधा'' के जरिए कम कीमत पर उपलब्ध हो सकती हैं। उपचार को आसानी से सार्वजनिक और/या निजी वितरण चैनलों के माध्यम से बच्चों और वयस्कों तक पहुंचाया जाना चाहिए।''

मुख्य बिंदु:

- भारत में सभी मौतों के कारणों के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाला पहला नमूना;
- 1 महीने से 70 वर्ष की आयु तक की अध्ययन में शामिल 75 342 मृत्यु में से, 2681 (3.6%) मौतें मलेरिया के बुखार की वजह से हुईं;
- इसलिए, पूरे भारत में 70 वर्ष की आयु से पहले प्रतिवर्ष 2 लाख मौतों का कारण मलेरिया ही होना चाहिए, सभी आयु की केवल 15 हजार मौतों के डब्ल्यूएचओ के अनुमान से कहीं ज्यादा;
- मलेरिया से होने वाली इन मौतों में से, 55 हजार बचपन के शुरुआती वर्षों में हुईं, 30 हजार 5–14 वर्ष के बच्चों में, और 1 लाख 20 हजार (1.2 लाख) 15–69 वर्ष की आयु के वयस्कों में हुई थीं;
- बचपन के शुरुआती वर्षों और बाद वाली अधेड़ उम्र में मृत्यु दर ऊंचा था;
- मलेरिया से होने वाली मौतों में से 90% ग्रामीण क्षेत्रों में और 86% ऐसी जगहों पर हुई जहां कोई स्वास्थ्य सुविधा मौजूद नहीं थी;
- मलेरिया से होने वाली इन मौतों में से आधी पूर्वी भारत के कुछ मलेरिया से ज्यादा प्रभावित राज्यों में हुई (उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, असम और इसके छोटे पड़ोसी राज्य);
- मलेरिया की वर्तमान मृत्यु दर पर, एक औसत भारतीय बच्चे के 70 वर्ष की आयु से पहले मलेरिया से मरने की संभावना 2% है, लेकिन यह जोखिम मलेरिया से ज्यादा प्रभावित राज्यों में कहीं ज्यादा है।
- मलेरिया से मौतें उन राज्यों में हुईं जहां भारतीय मलेरिया कार्यक्रम को मलेरिया परजीवियों की सबसे खतरनाक किस्म (प्लासमोडियम फाल्सीपेरम) की मौजूदगी का पता चला है, लेकिन यह वह राज्य नहीं हैं जहां खासतौर पर ऐसी अन्य बीमारियों की अधिक मौजूदगी को गलती से मलेरिया समझा जा सकता है।

भारतीय व पश्चिमी संख्या पर टिप्पणी: 1 लाख= 100 हजार

भारत में मलेरिया की वजह से वयस्क व बाल मृत्यु दर: राष्ट्रीय स्तर का प्रतिनिधित्व करने वाला मृत्यु दर संबंधी सर्वेक्षण। द् लैंसेट, 21 अक्टूबर 2010, DOI:S0140-6736(10)60831-8(*www.thelancet.com*)

अधिक जानकारी

उत्तरी अमेरिकी मीडिया (प्रो. प्रभात झा से संपर्क के लिए): कु. एंसेली वोंग, मोबाइल (+1) 416 662 1347, ईमेल wongans@smh.ca

भारतीय मीडिया: सुश्री प्रभा सती (प्रो. प्रभात झा से संपर्क के लिए): टेलीफोन (+91) 971 196 4550, ईमेल satip@smh.ca या डा. विनोद पी. शर्मा, मोबाइल (+91) 981 070 6411, ईमेल vinodsharma1938@gmail.com

इंग्लैंड व यूरोपीय मीडिया (प्रो. सर रिचर्ड पेटो से संपर्क के लिए): ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफिस, टेलीफोन (+44) 1865 280530, ईमेल: press.office@admin.ox.ac.uk या ईमेल: Richard.Peto@ctsu.ox.ac.uk

रिसर्च पेपर, भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में प्रेस विज्ञप्ति, वीडियो न्यूज रिलीज (भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में संस्करणों सहित), महत्वपूर्ण वैज्ञानिकों के उद्धरण, अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न, और प्रमुख परिणामों की पावरप्वाइंट स्लाइडें 21 अक्टूबर, 2010 से **www.cghr.org/malaria** पर उपलब्ध होंगे।

नई दिल्ली में गुरूवार, 21 अक्टूबर को सुबह 11.30–13.30 बजे से ताजमहल होटल, 1 मानसिंह रोड में प्रेस कॉन्फ्रेंस: आमंत्रण के लिए, (+91) 971 196 4550 पर सुश्री प्रभा सती से संपर्क करें।

(समाप्त)